महाराणा प्रताप महाविद्यालय ग्रन्थालय जंगल धूसड़, गोरखपुर 9/5/24

SAN 307/ SAN 309/ SAN 311/ SAN 313/ SAN 315

B.A. (VIth SEMESTER) EXAMINATION, 2023-24

SANSKRIT

GROUP - 1 : SAN 307 (Yoga Evam Prakritik Chikitsa-I)

GROUP - 2 : SAN 309 (Ayurveda Evam Swasthya Vigyan-I)

GROUP - 3 : SAN 311 (Bhartiya Vastushastra-I)

GROUP - 4 : SAN 313 (Jyotishshastra Ke Moolbhoot Sidhant-I)

GROUP - 5 : SAN 315 (Nityanamittik Anushthan-I)

(CBCS Mode)

AFFIX PRESCRIBED RUBBER STAMP

Date (तिथि) : ____________________

Paper ID

(To be filled in the OMR Sheet)

5562

अनुक्रमांक (अंकों में) :
Roll No. (In Figures) : | | | | | | | | | | | | | | | |

अनुक्रमांक (शब्दों में) : ______________________________

Roll No. (In Words) : ______________________________

Time : 1:30 Hrs. **Max. Marks : 75**

समय : 1:30 घण्टे **अधिकतम अंक : 75**

नोट : पुस्तिका में 50 प्रश्न दिये गये हैं, सभी प्रश्न करने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 1.5 अंक का होगा।

Important Instructions :

1. The candidate will write his/her Roll Number only at the places provided for, i.e. on the cover page and on the OMR answer sheet at the end and nowhere else.

2. Immediately on receipt of the question booklet, the candidate should check up the booklet and ensure that it contains all the pages and that no question is missing. If the candidate finds any discrepancy in the question booklet, he/she should report the invigilator within 10 minutes of the issue of this booklet and a fresh question booklet without any discrepancy be obtained.

महत्वपूर्ण निर्देश :

1. अभ्यर्थी अपने अनुक्रमांक केवल उन्हीं स्थानों पर लिखेंगे जो इसके लिए दिये गये हैं, अर्थात् प्रश्न पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ तथा साथ दिये गये ओ०एम०आर० उत्तर पत्र पर, तथा अन्यत्र कहीं नहीं लिखेंगे।

2. प्रश्न पुस्तिका मिलते ही अभ्यर्थी को जाँच करके सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि इस पुस्तिका में पूरे पृष्ठ हैं और कोई प्रश्न छूटा तो नहीं है। यदि कोई विसंगति है तो प्रश्न पुस्तिका मिलने के 10 मिनट के भीतर ही कक्ष परिप्रेक्षक को सूचित करना चाहिए और बिना त्रुटि की दूसरी प्रश्न पुस्तिका प्राप्त कर लेना चाहिए।

Group - 1 : SAN 307 (Yoga Evam Prakritik Chikitsa - I)

1. 'योगसूत्र' रचना है –
   (A) पाणिनि की
   (B) पतंजलि की
   (C) शौनक की
   (D) कात्यायन की

2. चित्तवृत्तियों की संख्या है –
   (A) 4
   (B) 5
   (C) 6
   (D) 7

3. क्लिष्ट–अक्लिष्ट विभाजन है –
   (A) निद्रा का
   (B) स्मृति का
   (C) चित्तवृत्तियों का
   (D) प्रमाण का

4. चित्त की वृत्ति का निरोध होता है –
   (A) अभ्यास से
   (B) विकल्प से
   (C) विपर्यय से
   (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

5. स्मृत विषय का पुनः उभर आना है –
   (A) निद्रा
   (B) स्मृति
   (C) अभ्यास
   (D) विकल्प

6. मिथ्या ज्ञान कहलाता है –

(A) निद्रा

(B) स्मृति

(C) विपर्यय

(D) विकल्प

7. योगसूत्र के अनुसार प्रमाण है –

(A) 3

(B) 4

(C) 5

(D) 6

8. 'शशकश्रृंग' में निम्न वृत्ति है –

(A) निद्रा

(B) विकल्प

(C) विपर्यय

(D) स्मृति

9. अभ्यास व वैराग्य से होता है –

(A) चित्तवृत्ति निरोध

(B) अनुभूत विषय सम्प्रमोष

(C) प्रत्ययालम्बना वृत्ति

(D) मिथ्या ज्ञान

10. अभ्यास का दृढ़ आधार बनता है –

(A) दीर्घकाल से

(B) निरन्तरता से

(C) सत्कार से

(D) उपर्युक्त सभी से

11. यम की संख्या है –

(A) 2

(B) 3

(C) 4

(D) 5

12. योग के अंग हैं –

(A) 5

(B) 6

(C) 7

(D) 8

13. नियम हैं –

(A) 2

(B) 4

(C) 5

(D) 6

14. 'शौच' कहलाता है –

(A) यम

(B) नियम

(C) प्राणायाम

(D) प्रत्याहार

15. सभी गुरूओं का भी गुरू है –

(A) माता

(B) पिता

(C) गुरू

(D) परमेश्वर

16. यम–नियमों के विपरीत कहलाता है –

(A) वितर्क

(B) विकल्प

(C) प्रतिपक्ष

(D) भावना

17. ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा होने पर मिलता है –

(A) सर्वरत्न

(B) वीर्यलाभ

(C) सत्यवक्तृत्व

(D) वैरत्याग

18. अहिंसा की प्रतिष्ठा होने से होती है –

(A) क्रियाफल की प्राप्ति

(B) रत्नप्राप्ति

(C) वैरत्याग भाव की प्राप्ति

(D) वीर्यलाभ की प्राप्ति

19. 'नास्ति योगात्परं बलम्' उद्धृत है –

(A) योग सूत्र से

(B) व्यास संहिता से

(C) घेरण्ड संहिता से

(D) सांख्य सूत्र से

20. किसके समान पाप नहीं हैं –

(A) योग के समान

(B) बैर के समान

(C) माया के समान

(D) अहंकार के समान

21. शत्रु नहीं है –

(A) अहंकार सदृश

(B) माया सदृश

(C) योग सदृश

(D) लिप्सा सदृश

22. बन्धु नहीं है –

(A) ज्ञान सदृश

(B) अज्ञानसदृश

(C) योग सदृश

(D) यात्रा सदृश

23. घेरण्ड संहिता प्रारम्भ होती है –

(A) चण्डीदास के प्रश्न से

(B) दामोदर नाथ के प्रश्न से

(C) चण्डकापालि के प्रश्न से

(D) कापालिकदूत के प्रश्न से

24. 'घट' कहते हैं –

(A) घड़े को

(B) शरीर को

(C) मन को

(D) आत्मा को

25. योगाभ्यास करने से होता है –

(A) ज्ञान–प्राप्ति

(B) अज्ञान–निवृत्ति

(C) तत्वज्ञान

(D) भवप्रत्यय

26. शरीर की शुद्धि के लिए साधन कहे गए हैं –

(A) 5

(B) 7

(C) 3

(D) 4

27. शोधन नामक साधन है –

(A) यम में

(B) धारणा में

(C) प्राणायाम में

(D) षट्कर्म में

28. षट्कर्म में इसकी गणना नहीं है –

(A) धौति

(B) नौलि

(C) प्राणायाम

(D) वस्ति

29. पुण्य–पाप के कार्यों से प्राणियों के ______ उत्पन्न होते हैं –

(A) शरीर

(B) कर्म

(C) मन

(D) आत्मा

30. घटशुद्धि होती है –

(A) जठराग्नि से

(B) योगाग्नि से

(C) आसन से

(D) प्राण से

31. शोधन के पश्चात् शरीर दृढ़ बनता है –

(A) प्राणायाम से

(B) मुद्रा से

(C) बस्ति से

(D) आसन से

32. मुद्राओं से होती है –

(A) शान्ति

(B) शुद्धि

(C) दृढ़ता

(D) स्थिरता

33. धैर्य की प्राप्ति होती है –

(A) यम से

(B) नियम से

(C) प्राणायाम से

(D) प्रत्याहार से

34. ध्येय पदार्थ का प्रत्यक्ष दर्शन होता है –

(A) प्राणायाम से

(B) प्रत्याहार से

(C) ध्यान से

(D) समाधि से

35. निर्लिप्त आसक्तिराहित्य की प्राप्ति होती है –

(A) समाधि से

(B) ध्यान से

(C) धारणा से

(D) प्राणायाम से

36. 'स तु दीर्घकालनैरन्तर्य _____ दृढ़भूमिः' रिक्त स्थान में होगा –

(A) प्राणायामसेवितो

(B) आसनसेवितो

(C) सत्कारासेवितो

(D) ध्यानसेवितो

37. ईश्वर प्रणिधान का अर्थ है –

(A) ईश्वर को भोग लगाना

(B) ईश्वर को धान्य खिलाना

(C) ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण

(D) ईश्वर के प्रति पूर्ण विरक्ति

38. ईश्वर का वाचक शब्द है –

(A) ओम्

(B) अथ

(C) मंगल

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

39. _____ मिथ्याज्ञानम् अतद्रूपम् प्रतिष्ठितम्।' रिक्त स्थान का पूरक शब्द है –

(A) विकल्पो

(B) विपर्ययो

(C) निद्रा

(D) स्मृतिः

40. 'देशबन्ध चित्तस्य' _____ रिक्त स्थान का पूरक शब्द है –

(A) प्राणायाम

(B) धारणा

(C) ध्यान

(D) उपर्युक्त में कोई नहीं

41. ज्ञानेन्द्रियाँ हैं –

(A) 1

(B) 2

(C) 5

(D) 4

42. घेरण्ड संहिता के अध्यायों का अपर नाम है –

(A) उपदेश

(B) ज्ञानोपदेश

(C) राजोपदेश

(D) भावोपदेश

43. ऋषियों ने वेदमंत्रों का साक्षात्कार किया –

(A) बुद्धि द्वारा

(B) बल द्वारा

(C) काम द्वारा

(D) योग द्वारा

44. घेरण्ड संहिता में श्लोक हैं –

(A) 350

(B) 250

(C) 450

(D) 400

45. महर्षि घेरण्ड हैं –

(A) शैव

(B) बौद्ध

(C) जैन

(D) वैष्णव

46. घेरण्ड संहिता में वर्णित है –

(A) आसन

(B) नाटक

(C) व्यायोग

(D) मीमांसा

47. चिबुक का अर्थ है –

(A) ठोड़ी

(B) जाँघ

(C) भुजा

(D) भौंह

48. 'जानु' का अर्थ है –

(A) आँख

(B) पैर

(C) घुटना

(D) पादतल

49. 'पायु' का अर्थ है –

(A) मुख

(B) दाँत

(C) पैर

(D) गुदा

50. 'अभाव प्रत्ययालम्बनावृत्ति ______' में होगा –

(A) स्मृति

(B) निद्रा

(C) विकल्प

(D) विपर्यय

*****

Group - 2 : SAN 309 (Ayurveda Evam Swasthya Vigyan - I)

1. आयुर्वेद का सम्बन्ध है –

   (A) मनुष्यों से

   (B) जीवों से

   (C) वनस्पतियों से

   (D) उपर्युक्त सभी से

2. चेतन पदार्थ में जब तक चेतना का अनुबंध रहता है, उस अवधि को कहते हैं –

   (A) मृत्यु

   (B) आयु

   (C) पाषाण

   (D) रत्न

3. आयु सम्बन्धी प्रत्येक ज्ञेयविषयक ज्ञान को कहते हैं –

   (A) शिल्पवेद

   (B) दण्डनीति

   (C) आयुर्वेद

   (D) इनमें से कोई नहीं

4. आयुर्वेद का अर्थ है –

   (A) जड़ का ज्ञान

   (B) मणियों का ज्ञान

   (C) आयु का ज्ञान

   (D) इनमें से कोई नहीं

5. ऋग्वेद में देवताओं के वैद्य हैं –

   (A) सुदास

   (B) पणिय

   (C) अश्विनी कुमार

   (D) मरूद्‌गण

6. चरक संहिता के रचयिता हैं –

(A) सुश्रुत

(B) अग्निवेश

(C) वाग्भट

(D) चरक

7. चरक संहिता को प्रतिसंस्कृत किया –

(A) वाग्भट ने

(B) चरक ने

(C) अग्निवेश ने

(D) सुश्रुत ने

8. आयुर्वेद का अङ्ग नहीं है –

(A) कायचिकित्सा

(B) शल्यतंत्र

(C) वाजीकरण

(D) भूरक्षण

9. आयुर्वेद का विषय नहीं है –

(A) भूतविद्या

(B) कौमारभृत्य

(C) पाषाण विद्या

(D) विषतंत्र

10. च्वथन ऋषि को वृद्ध से युवा बनाया –

(A) धनवन्तरि ने

(B) चरक ने

(C) सुश्रुत ने

(D) अश्विनी कुमारों ने

11. च्वथन ऋषि को नेत्र प्रदान किया था –

(A) अश्विनी कुमारों ने

(B) दृढ़बल ने

(C) इन्द्र ने

(D) भरद्वाज ने

12. प्रजापति ने आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया था –

(A) इन्द्र से

(B) ब्रह्मा से

(C) अश्विनी कुमारों से

(D) भरद्वाज से

13. प्रजापति ने आयुर्वेद का उपदेश दिया था –

(A) भरद्वाज को

(B) इन्द्र को

(C) अश्विनी कुमारों को

(D) इनमें से कोई नहीं

14. इन्द्र ने आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया था –

(A) अश्विनी कुमारों से

(B) भरद्वाज से

(C) प्रजापति से

(D) ब्रह्मा से

15. भरद्वाज ने आयुर्वेद का अध्ययन किया –

(A) अश्विनी कुमारों से

(B) इन्द्र से

(C) प्रजापति से

(D) इनमें से कोई नहीं

16. पुनर्वसु आत्रेय के शिष्य थे –

(A) अग्निवेश

(B) भरद्वाज

(C) विश्वामित्र

(D) धनवन्तरि

17. मनुष्य लोक में आयुर्वेद का प्रचार–प्रसार किया था –

(A) इन्द्र ने

(B) भरद्वाज ने

(C) प्रजापति ने

(D) अश्विनी कुमारों ने

18. सूत्रस्थानम् में अध्यायों की संख्या है –

(A) 11

(B) 21

(C) 31

(D) 30

19. त्रिसूत्र आयुर्वेद के अंतर्गत नहीं आता है –

(A) द्रव्य सूत्र

(B) प्रतिज्ञा सूत्र

(C) लिङ्ग सूत्र

(D) हेतु सूत्र

20. शारीरिक व्याधि का कारण है –

(A) सत

(B) रज

(C) तम

(D) कुपित वात

21. त्रिदोष के अंतर्गत आता है –

(A) तम

(B) रज

(C) सत

(D) पित्त

22. मानसिक रोगों का कारण है –

(A) रजोगुण की वृद्धि

(B) सतोगुण की वृद्धि

(C) उक्त दोनों की वृद्धि

(D) उक्त दोनों की न्यूनता

23. द्रव्य (औषध) सूत्र के अंतर्गत विषय हैं –

(A) दोषशामक

(B) दोषप्रकोपक

(C) स्वास्थ्य के लिए हितकारी

(D) उपर्युक्त सभी

24. शरीर, इन्द्रिय, मन और आत्मा के संयोग को कहते हैं –

(A) निराकार

(B) आयु

(C) मृत्यु

(D) इनमें से कोई नहीं

25. सदा सभी भावों की वृद्धि करने वाला होता है –

(A) विशेष

(B) क्रिया

(C) सामान्य

(D) इनमें से कोई नहीं

26. सभी भावों का ह्रास करने वाला कारण होता है –

(A) सामान्य

(B) विशेष

(C) सामान्यतोदृष्ट

(D) दृष्टानुश्रविक

27. द्रव्य सामान्य का उदाहरण है –

(A) मांस खाने से मांस बढ़ता है

(B) मांस खाने से मांस घटता है

(C) मांस खाने से मांस सड़ता है

(D) इनमें से कोई नहीं

28. सामान्य का भेद नहीं है –

(A) द्रव्य सामान्य

(B) कर्म सामान्य

(C) अतिरेक

(D) गुण सामान्य

29. 'बालतंत्र' भी कहते हैं –

(A) शल्यतंत्र को

(B) शालाक्य तंत्र को

(C) कौमार भृत्य को

(D) उक्त किसी को नहीं

30. पृथिवी आदि द्रव्यों के साथ गुणों का संबंध है –

(A) समवाय

(B) असमवाय

(C) निमित्त

(D) इनमें से कोई नहीं

31. तन्तु और पट का संबंध है –

(A) निमित्त

(B) असमवाय

(C) समवाय

(D) इनमें से कोई नहीं

32. धातुओं के साम्य को कहते है –

(A) रोग

(B) आरोग्य

(C) मानस रोग

(D) इनमें से कोई नहीं

33. धातुओं के वैषम्य को कहते हैं –

(A) आरोग्य

(B) विकार

(C) निर्माण

(D) इनमें से कोई नहीं

34. सर्वाधिक रोग उत्पन्न होने का कारण है –

(A) पित्त

(B) कफ

(C) वायु

(D) कपालभाति

35. दैवव्यपाश्रय चिकित्सा के साधन हैं –

(A) मंत्र

(B) मणि

(C) होम

(D) उपर्युक्त सभी

36. युक्तिव्यपाश्रय के साधन है –

(A) रस

(B) औषध

(C) भस्म

(D) उपर्युक्त सभी

37. इहलोक और परलोक दोनों के हितों को कहता है –

(A) आयुर्वेद

(B) वृक्ष

(C) लवण

(D) कोई नहीं

38. वायु, शीत द्रव्यों के संयोग तथा विहार से होता है –

(A) शान्त

(B) कुपित

(C) तटस्थभाव

(D) इनमें से कोई नहीं

39. शीत, मृदु, मधुर, तिक्त एवं कषाय द्रव्यों के प्रयोग से पित्त होता है –

(A) अशान्त

(B) शान्त

(C) निष्प्रभावी

(D) इनमें से कोई नहीं

40. सर्वोत्तम आहार है –

(A) दुग्ध

(B) मांस

(C) मछली

(D) अण्डा

41. पञ्चाङ्ग के अंतर्गत नहीं है –

(A) पत्ती

(B) फल

(C) जड़

(D) मिट्टी

42. मूर्ख वैद्य द्वारा प्रयुक्त औषधियाँ मनुष्यों का ______?

(A) हित करती हैं

(B) आरोग्य प्रदान करती हैं

(C) नाश करती हैं

(D) इनमें से कोई नहीं

43. दुग्ध में पायी जाती है –

(A) रस में मधुरता

(B) गुण में स्निग्धता

(C) वीर्य में शीतलता

(D) उपर्युक्त सभी

44. सर्वोत्तम दुग्ध माना गया है –

(A) अवि का

(B) बकरी का

(C) हथिनी का

(D) गाय का

45. जो रोगों से रोगियों को मुक्त करे –

(A) वही श्रेष्ठ वैद्य है

(B) वही श्रेष्ठ कलाकार है

(C) वही श्रेष्ठ रसोइया है

(D) कोई नहीं

46. श्वांस कास और अर्श रोग का नाशक है –
   (A) घोड़े का मूत्र
   (B) हाथी का मूत्र
   (C) ऊँट का मूत्र
   (D) कोई नहीं

47. पाचन क्रिया में आहार का जो सार भाग होता है उससे पोषण होता है –
   (A) मलमूत्र का
   (B) रस धातु का
   (C) कफ का
   (D) कोई नहीं

48. 'माधवनिदान' के रचनाकार –
   (A) चरक
   (B) शार्ङ्गधर
   (C) माधव
   (D) सुश्रुत

49. आयुर्वेद के अनुसार शरीर में धातुएं हैं –
   (A) 03
   (B) 08
   (C) 07
   (D) 01

50. जो व्यक्ति अविवेक, दुराचार, क्रूरता, अत्याचार आदि दुर्गुणों से युक्त और समाज के लिए अभिशाप होते हैं, उन्हें कहते हैं –
   (A) अहितायु
   (B) हितायु
   (C) सुखायु
   (D) कोई नहीं

*****

1. वास्तुसौख्यम् के रचयिता हैं –
   (A) कमलाकान्त शुक्ल
   (B) टोडरमल्ल
   (C) वाराहमिहिर
   (D) इनमें से कोई नहीं
2. ज्योतिष का स्कन्ध है –
   (A) सिद्धान्त
   (B) संहिता
   (C) होरा
   (D) उपर्युक्त सभी
3. स्थापत्य कला (वास्तु) के अधिष्ठाता देव है –
   (A) विश्वकर्मा
   (B) नन्दी
   (C) कुबेर
   (D) धनवंतरि
4. गृह प्रवेश का प्रकार है –
   (A) अपूर्व
   (B) सपूर्व
   (C) द्वन्द्वाभय
   (D) उपर्युक्त सभी
5. टोडरमल्ल प्रधानमंत्री था –
   (A) औरंगजेब का
   (B) अकबर का
   (C) अलाउद्दीन का
   (D) शाहजहाँ का

6. संहिता सौख्य का प्रकरण नहीं है –

(A) अद्भुत सौरूप

(B) व्यवहार सौरूप

(C) वास्तु सौरूप

(D) समाधि सौरूप

7. वास्तुसौख्यम् में वास्तु पुरूष का स्वरूप वर्णित है –

(A) प्रथम भाग में

(B) तृतीय भाग में

(C) पंचम भाग में

(D) षष्ठ भाग में

8. वास्तुसौख्यम् द्वितीय भाग का वर्ण्य विषय है –

(A) भूमि परीक्षण

(B) दिक्साधन

(C) निवासहेतु स्थान निर्वाचन

(D) उपर्युक्त सभी

9. वास्तुसौख्यम् में आयादि–विचार है –

(A) अष्टम भाग में

(B) सप्तम भाग में

(C) प्रथम भाग में

(D) पञ्चम भाग में

10. द्वारनिर्णय एवं द्वारफल का विवेचन है –

(A) तृतीय भाग में

(B) सप्तम भाग में

(C) नवम भाग में

(D) अष्टम भाग में

11. वास्तु सौख्यम् के मङ्गलाचरण में स्तुति है –

(A) शिव की

(B) विष्णु की

(C) दुर्गा की

(D) गणेश की

12. गृहस्थस्य क्रियाः सर्वा न सिद्ध्यन्ति गृहं बिन।

यतस्तस्माद् गृहारम्भप्रवेशसमयौ ब्रुवे।।

उपर्युक्त श्लोक का वर्णन है –

(A) प्रथम भाग में

(B) द्वितीय भाग में

(C) पञ्चम भाग में

(D) नवम भाग में

13. वास्तु पुरूष की उत्पत्ति बतायी गयी है –

(A) कृतयुग में

(B) द्वापर में

(C) त्रेता में

(D) कलयुग में

14. वास्तु पुरूष का नामकरण किया था –

(A) ब्रह्मा ने

(B) विष्णु ने

(C) इन्द्र ने

(D) शिव ने

15. भूमि–शोधन का प्रकार है –

(A) गन्ध–परीक्षा

(B) वर्ण–परीक्षा

(C) रस–परीक्षा

(D) उपर्युक्त सभी

16. घर के उत्तर दिशा में रहने वाला वृक्ष शुभ होता है –

(A) पीपल

(B) बरगद

(C) पाकड़

(D) गूलर

17. बरगद का वृक्ष शुभदायी होता है –

(A) पूर्व दिशा में

(B) पश्चिम दिशा में

(C) उत्तर दिशा में

(D) दक्षिण दिशा में

18. गृह के समीप काँटेदार वृक्ष होता है –

(A) अर्थनाशक

(B) शत्रुभय कारक

(C) धनप्रद

(D) इनमें से कोई नहीं

19. गृह के समीप दुग्ध वाला वृक्ष होता है –

(A) अर्थप्रद

(B) अर्थनाशक

(C) शत्रुनाशक

(D) पुत्रनाशक

20. अशुद्ध कथन है –

(A) ब्राह्मण के लिए कुश–सूत्र

(B) क्षत्रिय के लिए मूंज–सूत्र

(C) वैश्य के लिए सन–सूत्र

(D) शूद्र के लिए सन–सूत्र

21. वास्तु पुरूष के शिर में खनन से होता है –
    (A) माता की हानि
    (B) पिता की हानि
    (C) धन की हानि
    (D) उपर्युक्त सभी की हानि

22. वास्तु–पुरूष का शिर होता है –
    (A) वायव्य में
    (B) आग्नेय में
    (C) ईशान में
    (D) नैऋत्य में

23. वास्तु–पुरूष के हृदय में स्थित है –
    (A) शिखि
    (B) पर्जन्य
    (C) पापयक्ष्मा
    (D) ब्रह्मा

24. चौसठ पद के चतुर्भुज वास्तु में रेखाएं होगी –
    (A) 10-10
    (B) 9-9
    (C) 8-8
    (D) 7-7

25. चौसठ एवं इक्यासी पदीय वास्तु का प्रकार नहीं है –
    (A) द्विभुज
    (B) त्रिभुज
    (C) वृत्त
    (D) चतुर्भुज

26. वास्तु की लम्बाई पूर्व–पश्चिम अधिक होने पर, होगा –

(A) चन्द्रवेध

(B) सूर्यवेध

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

27. उत्तर–दक्षिण की लम्बाई अधिक होने पर, होगा –

(A) सूर्य–वेध

(B) चन्द्रवेध

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

28. प्रशस्त वास्तु है –

(A) चन्द्रवेधी

(B) सूर्यवेधी

(C) यमवेधी

(D) इनमें से कोई नहीं

29. असत्य कथन है वास्तु पुरूष का –

(A) शिर पूर्व में होता है

(B) उत्तर में पृष्ठ होता है

(C) पश्चिम में कुक्षि होता है

(D) दक्षिण में क्रोड होता है

30. पूर्व दिशा में वास्तु के बढ़ने पर होगा –

(A) मृत्यु–भय

(B) मित्र–वैर

(C) अर्थ–विनाश

(D) मनस्ताप

31. पुराने गृह का काष्ठ नूतन गृह में लगाने से होता है –

(A) लाभ

(B) यश

(C) गृहस्वामी की मृत्यु

(D) शुभ

32. पाकशाला होनी चाहिए –

(A) वायव्य में

(B) ईशान में

(C) नैऋत्य में

(D) आग्नेय में

33. देवालय के लिए प्रशस्त है –

(A) ईशान

(B) आग्नेय

(C) नैऋत्य

(D) वायव्य

34. सर्वतोभद्र वास्तु का लक्षण है –

(A) एक दिशा में शाला

(B) दो दिशाओं में शाला

(C) चारों दिशाओं में शाला

(D) इनमें से कोई नहीं

35. पश्चिम दिशा छोड़कर सभी दिशाओं में द्वार होता है –

(A) सर्वतोभद्र वास्तु में

(B) नन्द्यावर्तम् वास्तु में

(C) वर्धमानम् वास्तु में

(D) स्वस्तिकम् वास्तु में

36. उत्तरदिशा छोड़कर सभी दिशाओं में शाला होता है –

(A) हिरण्यनाथ वास्तु

(B) सुक्षेत्र वास्तु

(C) चुल्ली वास्तु

(D) पक्षघ्न वास्तु

37. प्रशस्त वास्तु है –

(A) चुल्ली वास्तु

(B) कांच वास्तु

(C) सुक्षेत्र वास्तु

(D) पक्षघ्न वास्तु

38. दक्षिण एवं पश्चिम दिशा में शाला वाला वास्तु है –

(A) सिद्धार्थ

(B) यमसूर्य

(C) दण्ड

(D) गृहचुल्ली

39. प्रशस्त वास्तु है –

(A) दण्ड

(B) कांच

(C) सिद्धार्थ

(D) यमसूर्य

40. चारों दिशाओं में द्वारा वाला एकशाला वास्तु है –

(A) पुण्डरीक

(B) विश्वतोमुख

(C) विजय

(D) सूकर

41. शिखि, पर्जन्य, जयन्त, इन्द्र, सूर्य, सत्य, भ्रश अन्तरिक्ष और अनिल देवता हैं –

(A) पूर्व दिशा के

(B) पश्चिम दिशा के

(C) उत्तर दिशा के

(D) दक्षिण दिशा के

42. असुर, वरूणादि देवता हैं –

(A) पूर्व दिशा के

(B) उत्तर दिशा के

(C) पश्चिम दिशा के

(D) दक्षिण दिशा के

43. प्रशस्त वास्तु का ढ़लान होता है –

(A) ईशान में

(B) आग्नेय में

(C) वायव्य में

(D) नैऋत्य में

44. दिति, अदिति, सोमादि देवता हैं –

(A) पूर्व दिशा के

(B) पश्चिम दिशा के

(C) उत्तर दिशा के

(D) दक्षिण दिशा के

45. इक्यासी पदीय चतुर्भुज वास्तु में ब्रह्मा का पद है –

(A) 4

(B) 6

(C) 9

(D) 12

46. चौसठ पदीय चतुर्भुज वास्तु में ब्रह्मा का पद है –

(A) 3

(B) 5

(C) 6

(D) 4

47. यम, विवस्वान् बृहत्क्षतादि देवता हैं –

(A) पूर्व दिशा के

(B) पश्चिम दिशा के

(C) उत्तर दिशा में

(D) दक्षिण दिशा में

48. त्रिभुज वास्तु के प्रकारों में है –

(A) 25 पदीय

(B) 63 पदीय

(C) 81 पदीय

(D) 88 पदीय

49. पंञ्च तत्वों के अंतर्गत नहीं आता है –

(A) अग्नि

(B) वायु

(C) वृक्ष

(D) जल

50. पंञ्च तत्वों के अंतर्गत आता है –

(A) पीपल

(B) गूलर

(C) आकाश

(D) बरगद

*****

Group - 4 : SAN 313 (Jyotishshastra Ke Moolbhoot Sidhant - I)

1. राशि का नाम नहीं है –
   (A) मकर
   (B) कुम्भ
   (C) मीन
   (D) भद्रा

2. ज्योतिष–चंद्रिका ग्रन्थ के लेखक हैं –
   (A) मोहन लाल वर्मा
   (B) रेवती रमण शर्मा
   (C) कान्ता भाटिया
   (D) इनमें से कोई नहीं

3. ज्योतिष शब्द में 'ज्योति' का अर्थ है –
   (A) तारा
   (B) पिण्ड
   (C) भाग्यवेत्ता
   (D) गणक

4. ज्योतिष शब्द में 'ष' का अर्थ है –
   (A) प्रकाश
   (B) गणक
   (C) तारा
   (D) चन्द्र

5. कर्म सिद्धांत के अनुसार मनुष्य को भोगना पड़ता है –
   (A) दो प्रकार के कर्मफल
   (B) तीन प्रकार के कर्मफल
   (C) चार प्रकार के कर्मफल
   (D) पाँच प्रकार के कर्मफल

6. ज्योतिष–चन्द्रिका में योगों का उल्लेख है –

(A) 25

(B) 26

(C) 27

(D) 28

7. हिन्दू संवत्सर प्रारम्भ होता है –

(A) चैत्र से

(B) ज्येष्ठ

(C) आषाढ़ से

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

8. ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों की संख्या है –

(A) 8

(B) 10

(C) 09

(D) 05

9. कुण्डली में बारहवें घर का वैदिक नाम है –

(A) व्यास–भाव

(B) अभाव

(C) व्याघात

(D) अन्योन्याभाव

10. जन्मकुण्डली में बनने वाले कोष्ठकों को कहा जाता है –

(A) कुण्डली

(B) भाव

(C) राशि

(D) नक्षत्र

11. भावों की संख्या है –

(A) 12

(B) 14

(C) 16

(D) 18

12. प्रथम भाव का नाम है –

(A) पराक्रम

(B) सुख

(C) लग्न

(D) सुत

13. जाया भाव कहते हैं –

(A) पंचम भाव को

(B) प्रथम भाव को

(C) तृतीय भाव को

(D) सप्तम भाव को

14. अब्द का अर्थ है –

(A) वर्ष

(B) माह

(C) तिथि

(D) दिवस

15. 'ईज' का अर्थ है –

(A) बृहस्पति

(B) शुक्र

(C) शनि

(D) मंगल

16. 'कुज' पारिभाषिक नाम है –

(A) बुध ग्रह का

(B) शुक्र ग्रह का

(C) मंगल ग्रह का

(D) बृहस्पति ग्रह का

17. आयेश का अर्थ है –

(A) कुण्डली का स्वामी

(B) आय का स्वामी

(C) भाव का स्वामी

(D) भाग्य का स्वामी

18. मकर व कुम्भ राशि का स्वामी है –

(A) बुध

(B) शुक्र

(C) शनि

(D) मंगल

19. नक्षत्रों का समूह कहलाता है –

(A) लग्न

(B) मुहूर्त

(C) राशि

(D) घटी

20. काल नियामक शब्द है –

(A) भाव बल का

(B) लग्न का

(C) राशि का

(D) होरा का

21. ज्योतिष में 'अहोरात्र' संज्ञा है –

(A) फलित शास्त्र की

(B) दिन व रात की

(C) आहार शास्त्र की

(D) नक्षत्र–शास्त्र की

22. भाव के अधिपति ग्रह की संज्ञा है –

(A) आयेश

(B) भावेश

(C) भावावेश

(D) भावाधिपति

23. आचार्य नरपति रचित ग्रन्थ है –

(A) नरपति जयचर्या

(B) नरपति विजयचर्या

(C) नरपति आचारचर्या

(D) नरपति तत्त्वचर्या

24. 'चलित' से तात्पर्य है –

(A) नक्षत्र चाल

(B) ग्रहों का चलना

(C) ग्रहों का भाव

(D) खिसकना

25. कीट राशि है –

(A) तुला

(B) मकर

(C) वृश्चिक

(D) कुम्भ

26. 'दिक्' संज्ञा है –

(A) दिशा

(B) काल

(C) चेष्टा

(D) क्रिया

27. मासों की संख्या है –

(A) 10

(B) 12

(C) 11

(D) 13

28. 'ज्योतिष' को वेदाङ्ग पुरूष का माना जाता है –

(A) श्रोत्र

(B) नासिका

(C) चक्षु

(D) जिह्वा

29. ज्योतिष है –

(A) उपांग

(B) सर्वाङ्ग

(C) वेदाङ्ग

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

30. ज्योतिष का अपर नाम है –

(A) वैमानिक शास्त्र

(B) काल शास्त्र

(C) अर्थशास्त्र

(D) व्याकरण शास्त्र

31. ज्योतिष शास्त्र के मुख्यतः स्कन्ध हैं –

(A) 3

(B) 1

(C) 6

(D) 7

32. आजीविका के लिए भाव देखते हैं –

(A) दशम

(B) प्रथम

(C) द्वितीय

(D) द्वादश

33. सन्तान भाव है –

(A) प्रथम

(B) द्वितीय

(C) सप्तम

(D) पञ्चम

34. जातक के जन्म से संबंधित जानकारी देती है –

(A) सिद्धांत शास्त्र

(B) होरा शास्त्र

(C) संहिता शास्त्र

(D) उपर्युक्त सभी

35. बृहद् संहिता के रचयिता हैं –

(A) आर्यभट्ट

(B) पराशर

(C) वराहमिहिर

(D) दैवज्ञ

36. विश्व के समस्त कार्य अधीन होते हैं –

(A) दिक् के

(B) पृथिवी के

(C) आकाश के

(D) काल के

37. पंचाग में नहीं आता है –

(A) तिथि

(B) वार

(C) नक्षत्र

(D) माह

38. मानव शरीर में मुख्यतः व्याधियों के प्रकार हैं –

(A) 3

(B) 4

(C) 5

(D) 8

39. ज्योतिष शास्त्र की उत्पत्ति का मूल है –

(A) वेद

(B) पुराण

(C) उपनिषद्

(D) स्मृति

40. अङ्क विधा देन है –

(A) चीन की

(B) भारत की

(C) जापान की

(D) मिश्र की

41. पण्डित राम यत्न ओझा विद्वान् हैं –

(A) प्राचीन काल के

(B) मध्य काल के

(C) आधुनिक काल के

(D) इनमें से कोई नहीं

42. त्रिस्कन्ध ज्योतिष का उद्भव हो चुका था –

(A) ऋग्वैदिक काल में

(B) सिद्धांत काल में

(C) संहिता काल में

(D) इनमें से कोई नहीं

43. ग्रहों की गति व स्थिति का निर्धारण इस स्कन्ध में होता है–

(A) संहिता

(B) सिद्धांत

(C) होरा

(D) शकुन

44. भास्कर हैं –

(A) चन्द्रमा

(B) दिवा

(C) सूर्य

(D) रात्रि

45. वेदाङ्ग ज्योतिष के रचयिता हैं –

(A) दैवज्ञ

(B) स्वोपज्ञ

(C) लगध

(D) पिङ्गल

46. याजुष ज्योतिष में कारिकाएं हैं –

(A) 20

(B) 30

(C) 32

(D) 36

47. 'पञ्चसिद्धांतिका' के रचयिता हैं –

(A) लगध

(B) मंत्रेश्वर

(C) सीताराम झा

(D) वराहमिहिर

48. मुहूर्त मार्तण्ड रचना है –

(A) मार्तण्ड की

(B) नारायण की

(C) वराहमिहिर की

(D) लगध की

49. लघु पराशरी रचना है –

(A) वराहमिहिर की

(B) लगध की

(C) दैवज्ञ की

(D) नरपति की

50. धनेश का अर्थ है –

(A) गृह का स्वामी

(B) पशु का स्वामी

(C) धन का स्वामी

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

*****

Group - 5 : SAN 315 (Nityanamittik Anushthan - I)

1. सूर्योदय के कितनी घड़ी पूर्व ब्रह्ममुहुर्त का समय निर्धारित किया गया है –

(A) 2 घड़ी

(B) 4 घड़ी

(C) 3 घड़ी

(D) 5 घड़ी

2. कर के अग्र भाग में वास होता है –

(A) लक्ष्मी का

(B) सरस्वती का

(C) ब्रह्मा का

(D) गोविन्द का

3. प्रभात में दर्शन करना चाहिए –

(A) मस्तक का

(B) घर का

(C) हथेलियों का

(D) पृथ्वी का

4. समुद्र रूपी वस्त्र से सुशोभित है –

(A) समुद्र

(B) नदी

(C) पृथ्वी

(D) आकाश

5. 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा' इत्यादि मंत्रांश संबंधित है ?

(A) जल चढ़ाने से

(B) दीप जलाने से

(C) धूप दिखाने से

(D) पवित्र होने से

6. संध्या में उपासना की जाती है –

(A) नारायण की

(B) महादेव की

(C) सूर्य की

(D) ब्रह्मा की

7. संध्या में जप करते हैं –

(A) दुर्गा मंत्र का

(B) लक्ष्मी मंत्र का

(C) सरस्वती मंत्र का

(D) गायत्री मंत्र का

8. 'चिद्रूपिणि! महामाये! तेज शक्ति समन्विते!' इत्यादि मंत्रांश संबंधित हैं –

(A) तिलक लगाने से

(B) आचमन करने से

(C) शिखा बंधन से

(D) पुष्प अर्पण से

9. रेचक, कुम्भक, एवं पूरक ये अंश हैं –

(A) विनियोग के

(B) प्राणायाम के

(C) आचमन के

(D) इनमें से कोई नहीं

10. "आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽपरीतास उद्‌भिदः।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे"। इत्यादि मंत्रांश संबंधित हैं –

(A) मंगल स्नान से

(B) मंगल तिलक से

(C) स्वस्तिवाचन से

(D) मंगल आरती से

11. संकल्प होते हैं –

(A) 2 प्रकार के

(B) 3 प्रकार के

(C) 1 प्रकार के

(D) इनमें से कोई नहीं

12. *'ॐ गणानान्त्वा गणपति ν हवामहे प्रियानांत्वा प्रियपति ν हवामहे'*
मंत्रांश एवं
'ॐ अम्बे अम्बिकेअम्बालिके न मा नयति कश्चन् ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासनीम्
इत्यादि मंत्र संबंधित है –

(A) विष्णु लक्ष्मी से

(B) गणेश–गौरी से

(C) शिव–पार्वती से

(D) इनमें से कोई नहीं

13. 'पृथ्वी त्वया धृता लोकान् देवि त्वम् विष्णुना धृता' इत्यादि मंत्रांश संबंधित है :

(A) शुद्धिकरण से

(B) आचमन से

(C) आसनशुद्धि से

(D) प्राणायाम से

14. वरूणकलश में दूर्वा अर्पित (चढ़ाने का मंत्र) है –

(A) ऊँ० गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीविर्णीं

(B) ऊँ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा

(C) ऊँ० काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ति परूषः परूषस्परि

(D) ऊँ० स्योना पृथिविनों भवान नृक्षरा निवेशनी

15. 'ऊँ० हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जात पतिरेक आसीत' इत्यादि मंत्रांश संबंधित है –

(A) नैवेद्य से

(B) तिलक से

(C) स्नान से

(D) दक्षिणा से

16. 'ऊँ० पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यान्ति सस्रोत सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशेऽभवत्सरित' यह मंत्रांश संबंधित है –

(A) दुग्ध स्नान से

(B) पय (जल) स्नान से

(C) पञ्चामृत स्नान से

(D) मधु स्नान से

17. षोड़शोपचार में ईश्वर का पूजन किया जाता है –

(A) 10 प्रकार से

(B) 12 प्रकार से

(C) 14 प्रकार से

(D) 16 प्रकार से

18. 'ऊँ० शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विना' इत्यादि मंत्रांश संबंधित है –

(A) शुद्धोदक स्नान से

(B) घृत स्नान से

(C) मधु स्नान से

(D) इनमें से कोई नहीं

19. 'ऊँ० नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत, पदभ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रॉस्तथा–लोकान् अकल्पयन' यह मंत्र किससे है –

(A) नैवेद्य चढ़ाने से

(B) दीप दिखाने से

(C) तिलक लगाने से

(D) अबीर–गुलाल चढ़ाने से

20. 'रक्ष रक्ष गनाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवनिवात उक्त मंत्र संबंधित है–

(A) पाद्य अर्घ्य से

(B) विशेषार्घ्य से

(C) प्रदक्षिणार्घ्य से

(D) इनमें से कोई नहीं

21. कुण्ड का (हवन कुण्ड) परिसमूहन करना चाहिए –

(A) 3-3 कुशों से

(B) 2-2 कुशों से

(C) 4-4 कुशों से

(D) 1-1 कुशों से

22. कुण्ड से मिट्टी निकालनी चाहिए –

(A) मध्यमा एवं तर्जनी से

(B) अंगुष्ठ एवं मध्यमा से

(C) अंगुष्ठ एवं अनामिका से

(D) अंगुष्ठ एवं कनिष्ठिका से

23. हवन के कुण्ड के चारों ओर परितस्तरण (फैलाव) होता है –

(A) 3-3 कुशाओं का

(B) 4-4 कुशाओं का

(C) 5-5 कुशाओं का

(D) इनमें से कोई नहीं

24. हवन मण्डल में लिपाई होती है –

(A) दुग्ध से

(B) पानी से

(C) गंगाजल से

(D) गाय के गोबर से

25. चान्द्रायण व्रत है –

(A) नित्य कर्म

(B) नैमित्तिक कर्म

(C) प्रायश्चित कर्म

(D) इनमें से कोई नहीं

26. पञ्चवारण होम को जाना जाता है –

(A) शतचण्डी होम से

(B) रूद्र होम से

(C) सर्वतोभद्र होम से

(D) सर्वप्रायश्चित संज्ञक होम

27. नव ग्रह होम अर्क की समिधा (लकड़ी) आहुति में पड़ती है –

(A) चन्द्र देवता के निमित्त

(B) मंगल देवता के निमित्त

(C) सूर्य देवता के निमित्त

(D) राहू देवता के निमित्त

28. 'स्रुवा' का हवन करने में उपयोग होता है –

(A) शाकला डालने के लिए

(B) घी डालने के लिए

(C) उपरोक्त दोनों के लिए

(D) इनमें से कोई नहीं

29. पूर्णाहुति होम किया जाता है –

(A) आदि में

(B) मध्य में

(C) अन्त में

(D) उपरोक्त तीनों में से कोई नहीं

30. प्रजापतियों को आहुति दी जाती है –

(A) केवल घी से

(B) घी एवं शाकला दोनों से

(C) मधु से

(D) दधि से

31. रूद्राभिषेक में अभिषेक किया जाता है –

(A) विष्णु का

(B) शिव का

(C) इन्द्र का

(D) अग्नि का

32. महामृत्युञ्जय मंत्र से संबंधित देवता हैं –

(A) विष्णु

(B) ब्रह्मा

(C) शंकर

(D) इन्द्र

33. नवचण्डियों का ग्रहण होता है –

(A) नवग्रहों से

(B) नवदेवता से

(C) नवदेवियों से

(D) नव डाकिनियों से

34. नवग्रह शांति में शांति करायी जाती है –

(A) नव देवताओं की

(B) नव रूद्रों की

(C) नव गंधर्वों की

(D) नव ग्रहों की

35. ॐ० शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये' यह मंत्रांश आहुति डालने में प्रयुक्त होता है –

(A) अर्क की समिधा

(B) शमी की समिधा

(C) खदिर की समिधा

(D) अपामार्ग की समिधा

36. मूलगण्डान्त की शांति में नक्षत्रों की पूजा की जाती है –

(A) अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, रेवती, अश्विनी

(B) पुण्य, उ० षाढ़ा, पूर्वा० षाढ़ा, फाल्गुनी, मघा

(C) पूर्वा फाल्गुनी, भरणी, हस्त, चिता, घनिष्ठ

(D) इनमें से कोई नहीं

37. दुःस्वप्न शांति से अभिप्राय है –

(A) बुरे स्वप्न की शांति

(B) अच्छे स्वप्न की शांति

(C) उपरोक्त दोनों की शांति

(D) इनमें से कोई नहीं

38. वैधब्योपशांति किया जा सकता है –

(A) कन्या का पीपल से विवाह कराकर

(B) कन्या का कुम्भ से विवाह कराकर

(C) कन्या का काष्ठ पुरूष से विवाह कराकर

(D) इनमें से कोई नहीं

39. मंगल ग्रह की समिधा का नाम है –

(A) अर्क

(B) पलाश

(C) अपामार्ग

(D) खदिर

40. 'ऊँ० भूः भुवः स्वः' को कहा जाता है –

(A) महाव्याख्तियाँ

(B) प्रणव

(C) ओंकार

(D) इनमें से कोई नहीं

41. गायत्री मंत्र में अक्षरों की संख्या है –

(A) 12

(B) 24

(C) 36

(D) 13

42. सूर्य को अर्पित किया जाता है –

(A) श्वेत पुष्प

(B) रक्त पुष्प

(C) पीत पुष्प

(D) काला पुष्प

43. 'धूमकेतु' नाम है –

(A) शिव

(B) गणेश

(C) गौरी

(D) ब्रह्मा

44. 'भालचन्द्र' पर्याय है –

(A) गौरी

(B) विष्णु

(C) गणेश

(D) हनुमान

45. 'भौम' पर्याय है –

(A) सोम का

(B) मंगल का

(C) गुरू का

(D) बुध का

46. नैमित्तिक कर्म है –

(A) स्नान

(B) ज्योतिष्टोम यज्ञ

(C) चान्द्रायण व्रत

(D) इनमें से कोई नहीं

47. सर्वप्रथम पूजन होता है –

(A) गणेश का

(B) शिव का

(C) गौरी का

(D) विष्णु का

48. नवग्रह के अंतर्गत नहीं है –

(A) सूर्य

(B) चन्द्र

(C) मंगल

(D) लक्ष्मी

49. आचमन का मंत्र नहीं है –

(A) ॐ केशवाय नमः

(B) ॐ माधवाय नमः

(C) ॐ नारायणाय नमः

(D) ॐ हनुमते नमः

50. पवित्री धारण किया जाता है –

(A) अनामिका में

(B) तर्जनी में

(C) मध्यमा में

(D) उपर्युक्त में कोई नहीं

*****